मेरी बचपन की याद - बाढ़ (1)

बहुत साल पहले की बात है। एक छोटे गाँव में एक लड़की रहती थी। उसका नाम था - गुनजन। वो बहुत सुशील स्वाभाव की थी। हर किसी से अच्छे तरीके में बात करती थी। हर लोगों की मदद करती थी अगर वो मुसीबत में पड़ते तो। वो पढ़ाई में भी माहिर थी। लेकिन अचानक उसके ज़िंदगी में एक ऐसा तूफ़ान आया कि उसकी चेहरे की हँसी को छीन ली। वो ऐसा था -

~~दो हज़ार ग्यारह~~ साल का एक खूबसूरत दिन था। सुबह की गुनगुनी ~~दूप~~ धूप में गुनजन और उसकी बड़ी बहन खेल रही थी। छुट्टी का दिन था। इसलिए उन्होंने सोचा कि 'चलो भई, आज जी भरकर खेलेंगे'। लेकिन उनका सपना शुरू होने से पहले ही टूट गया। आसमान में काले बादल छाने लगे। पता नहीं की क्या हो रहा था। सब दोस्तों को अलविदा कहकर वे घर की तरफ़ भागने लगी। घर के देहरी पर उनकी माँ खड़ी होकर उनके इंतज़ार कर रहे थे। उनके घर पहुँचते ही तेज़ बारिश शुरू हुई। गुनजन ने सोचा 'गीली होने से बच गई'। बहुत देर तक तेज़ बारिश रही वो तो रुकने का नाम और निशान ही नहीं ले रही थी। पर फिर भी समय काटने केलिए गुनजन एक किताब पढ़ने लगी। उसे पढ़ने का बहुत शौक था। इसलिए उसके पापा ने कई सारी किताबे उसकेलिए खरीद ली थी। वह किताब का नाम था - "प्लास्टीक की दुनिया"। वो पढ़ती गई। उसमें ऐसा

OFFICE OF THE DEPUTY DIRECTOR OF EDUCATION THRISSUR

लिखा था – 'प्लास्टीक एक कुत्रिम ~~पर~~ पदार्थ है। वे धातुओं जैसे प्रकृति से नहीं मिलते। वो वैज्ञानिक विधि-वि से ~~~~ कारखानों में बनते है। ~~जहाज~~ हवाई जहाज तथा बच्चों की खिलौने में भी इसका उपयोग होता है। लेकिन असल में प्लास्टीक प्रकृति की हितु नहीं वरण उसका शत्रु है। प्लास्टीक सैकड़ो साल तक मिट्टी में दबी रहने पर भी मिट्टी से मिल नहीं जाते। प्लास्टीक अपने आसपास के हवा का आवगमन रोक देता है। इसलिए वहाँ कुछ नहीं पनपता"। यह सब पढने के बाद गुनजन ने सोचा - मुझे नहीं पता था कि प्लास्टीक की इतनी सारी बुराईआँ है। अब से प्लास्टीक के चीज़ो को बड़ी सावधानी से ही उपयोग करूँगी। लेकिन लोग नहीं समझते कि प्लास्टीक का उपयोग इतना खतरनाक है। वो कहीं पर भी इसे फैंक देते है। और अगर खेतों में है तो पानी भी वहाँ से नहीं बह जाएगा। कृषि भी नष्ट हो जाएगी।

यह सब सोचते रहते वक्त माँ की मधुर आवाज़ उसे सुनाई दी - 'बेटा बहुत रात हो गई है, सोने चलो'। यह सुनकर वह जल्दी से सोने गई।

कुछ दिन बाद की एक सुबह गुनजन ने सबकी चिल्लाहट सुनकर उठी। उस समय उसने देखा की पहले दिनों से भी तेज बारिश हो रही है। और घर में पानी ही पानी है। बाहर लोग पानी से ~~तैर~~ तैरते हुए, अपनों को ढूँड रहे है। 'यह सब क्या हो रहा है माँ' - गुनजन ने माँ से पूछा। लेकिन माँ ने जवाब नहीं दिया। वो

बहुत डरी हुई थी। उस तरफ पापा दादी से बात कर रहे थे। वो कह रहे थे - 'माँ चलिए। पानी बड़ी तेज़ी से घर के अंदर आ रही है। हमें यहाँ से चलना चाहिए।' और दादी ने कहा - "नहीं बेटा, मैं यहाँ से नहीं जाऊँगी। यह घर तुम्हारे पापा ने बड़ी मेहनत से बनाया था। अगर ये टूट जाएगी तो इसके साथ मैं भी मरूँगी।" गुनजन को कुछ समझ में नहीं आ रही थी। वो रोने लगी। तब दीदी आकर उसे गले लगाया और बोली - 'छोटी, तू क्यों यहाँ खड़ी है? हमें यहाँ से जल्दी चलना चाहिए।' उसने अपना सवाल दीदी से पूछा - 'दीदी ये क्या हो रहा है? लोग सब कहाँ जा रहे है? मुझे बहुत डर लग रहा है।' तब दीदी ने जवाब दिया 'छोटी, इसे बाढ़ कहते हैं। बारिश के कारण यह हुआ है। ये सब जगह तबाही ही मचाता है। कई लोगों के घर टूट जाते हैं। कई लोगों की जान चली जाती है। लोगों को कुछ पता नहीं होता कि कहाँ जाना है और किससे मदद माँगनी है।' तब भी गुनजन के मन में एक सवाल था - 'लेकिन दीदी यह सब क्यों हो रहा है?' 'यह सब इसलिए हो रहा है क्योंकि हमने कुछ ऐसा किया होगा जो प्रकृति केलिए हानीकारक होती है। जैसे - हम लोग सब पेड़ो को काटकर हमारी सुविधाओं केलिए उपयोग करते हैं। प्रकृति को ~~प्रदू~~ प्रदूषित करते हैं, प्लास्टीक को इधर-उधर फैंक देते हैं। यह सब चीज़े प्रकृति को ~~छोट~~ चोट पहूँचाता है। जब हम प्रकृति को ~~छोट~~ चोट पहूँचाते है, तब

प्रकृति भी उसका पलट जवाब, बाढ़, गुलामी जैसे चीज़ों से करता है।' यह सब सुनकर गुनजन को शर्म महसूस हुआ। उसे पता चला की इस बाढ़ का कारण मनुष्य की स्वार्थता ही है। यह सब सोचते रहते समय पापा आकर उसे ले गए। घर के बाहर नाव में माँ, दादी और दीदी बैठे रहे थे। पापा और उसने भी जल्दी से नाव में बैठकर वहाँ से चले गए। उस वक्त गुनजन के मन में सिर्फ़ एक सवाल आ रहा था- 'मेज़ पर रखे मेरे किताबों का क्या होगा?'.

गुनजन की बचपन की यह याद उसे बाढ़ में भी परेशान करती रही। नाव में उसके साथ कई लोग बैठे थे जिनके घर अब नहीं रहे थे, जिनके कई सपने इस बाढ़ में बह गई थी। उसके जीवन में आए यह संकट उसकेलिए एक भयानक याद थी। लेकिन कई साल बाद वो एक अच्छी प्रासंगिक के साथ-साथ 'नेचर आकडिविस्ट' भी बन गई और प्रकृति को सुरक्षित रखने के कामों में लग गई। वो दिन-रात मेहनत करके लोगों को यह बोध दिलाया कि प्लास्टीक जैसा कृत्रिम वस्तु, वनमूलन आदी प्रकृति को कितनी चोट पहुँचाती है। उसकी बचपन की यह याद ही उसे इस कामों केलिए प्रेरणा बनी।